परिवर्तन की कहानी

रमेश चंद्र गेहलोत की जुबानी

नमस्कार,

मेरा नाम रमेश चंद्र गेहलोत है। मैं रतलाम जिले के शासकीय प्राथमिक विद्यालय, खैरखुंटा में सहायक शिक्षक के पद पर कार्यरत हूँ। वर्ष 1991 में BSC गणित सें शिक्षा प्राप्त कर हम दो मित्रों ने मिलकर अपने पुश्तैनी गांव पेटलावद जिला झाबुआ में कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों को कोचिंग पढ़ाना प्रारंभ किया। साथ ही मैं खाली समय में जीवन बीमा का काम करता था। वर्ष 1994 में मैं आदिम जाति कल्याण विभाग में सहायक शिक्षक के रूप में शासकीय प्राथमिक विद्यालय भूरीघाटी मे पदस्थ हुआ। चूंकि पिछले कई वर्षों से में कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों को पढ़ाता था, अत: प्रायमरी के बच्चों को पढ़ाने का मेरे पास न तो अनुभव था और न ही मन लगता था, अत: 1998 में नौकरी छोड़कर हम 12 लोगों ने मिलकर पेटलावद में ही एक मिल्क प्रोसेसिंग प्लांट शुरू किया, जिसमें प्रत्यक्ष – अप्रत्यक्ष रूप से करीब 2,000 लोगों को रोजगार मिला। परंतु सड़क, बिजली एवं पानी की सुविधा के अभाव में वर्ष 2004 प्लांट में बंद हो गया और प्लांट के सभी डायरेक्टर भयंकर कर्ज में डूब गये। मैंने उसी समय तुरंत अपनी पुरानी नौकरी पुन: ज्वाइन की। हालांकि सिर्फ नौकरी से इतना बड़ा कर्ज उतारना संभव नहीं था, इसीलिए कर्ज उतारने के लिए साइड में एक चिटफंड कंपनी में काम करना शुरू किया। मैंने दिन रात मेहनत करके चिटफंड कंपनी के काम को मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात आदि राज्यों में फैला दिया। कार्यक्षेत्र दूर-दूर तक होने के कारण मैं अपनी विद्यालय की नौकरी से कई बार अनुपस्थित रहकर कंपनी के काम में लगा रहता था।

कंपनी मे अच्छा काम होने से एक वर्ष में ही मुझे इतना पैसा मिल गया कि मेरा सारा कर्ज उतर गया, परंतु लालच के चलते कंपनी में काम करता रहा। कंपनी में काम करते हुए अपनी बच्ची की पढ़ाई के लिए वर्ष 2007 में रतलाम जिले में शिफ्ट हो गया। वर्ष 2008 में अपना मकान भी खरीद लिया और 2010 में रतलाम जिले के शासकीय प्राथमिक विद्यालय, खैरखुंटा संकुल बासिंद्रा विकासखंड सैलाना में अपना ट्रांसफर भी करवा लिया। अब तक मेरे पास गाड़ी, बंगला, बैंक बैलेंस, प्रापर्टी आदि सभी कुछ हो गया था।

इसके बाद मैंने एक दिन शांत समय लिया और सोचा ईश्वर ने मेरे लिए सब अच्छा कर दिया है, अब मुझे ईमानदारी से केवल नौकरी करना चाहिए। सन् 2010 में मैंने कंपनी का काम छोड़ दिया, जैसे ही मेरे काम छोड़ने की खबर किसी दूसरी कंपनी के उच्चाधिकारी को मिली, वो मेरे पास आये एवं अपनी कंपनी का प्लान

समझाया। मैंने उनसे कहा कि मेरा सपना पूरा हो गया है। अब मैं इस प्रकार की कंपनियों मे काम करना नहीं चाहता। तब कंपनी के अधिकारी ने कहा कि आपका सपना तो पूरा हो गया, परंतु जिन्होंने आपका सपना पूरा करने में मदद की क्या उनके सपने पूरे हुए। मैंने घर आकर शांत समय में सोचा तो पाया कि मेरी मदद करने वाले अधिकतर साथियों ने कुछ नहीं पाया है। अत: मैंने मेरी टीम के टॉप लीडर्स के साथ मीटिंग की और सभी की सहमति से दूसरी चिटफण्ड कंपनी में कार्य प्रारंभ कर दिया। इस दौरान भी मैं अपने स्कूल की तरफ ज्यादा ध्यान नहीं दे पाया।

वर्ष 2016 में जब मेरी बेटी का आई.आई.टी. में चयन हुआ तो मुझे बहुत खुशी हुई। उसी दौरान मैंने विचार किया तो समझ में आया कि यदि मेरे जैसे शिक्षक मेरी बेटी को पढ़ाते तो क्या मेरी बेटी का, आई.आई.टी. जैसे संस्थान में चयन हो पाता। उत्तर आया नहीं। मुझे बहुत आत्मग्लानि होने लगी, बहुत रोना आया, इसके बाद मैंने संकल्प लिया कि अब किसी भी कंपनी में काम नहीं करुंगा और तुरंत ही मैंने चिटफंड कंपनी को इस्तीफा भेज दिया और अपने प्राथमिक विद्यालय पर पूरा ध्यान देने लगा, बच्चों को कहानियों के माध्यम से मोटिवेशन दिया और पूरी ताकत से उनकी नवोदय विद्यालय चयन परीक्षा की तैयारी करवाना शुरु किया।

उसके बाद से लगातार हर वर्ष मेरे विद्यालय से बच्चे नवोदय स्कूल में चयनित होते हैं। रतलाम जिले में आदिवासी विकास विभाग का हमारा एकमात्र सरकारी स्कूल है, जहां से इतने बच्चे नवोदय में चयनित हुए। मुझे अपने आर्थिक विकास से जो खुशी नहीं मिली, वो इन बच्चों को देखकर होती है। राज्य आनंद संस्थान, भोपाल में अल्पविराम के शिविर भी अटेंड किये। इससे मेरे मन में अपने काम के प्रति सम्मान जागा और कृत संकल्पित होकर मैं पूरी तरह से अपने कर्तव्य का पालन कर रहा हूँ। हालांकि एक बात का दु:ख अब भी है कि चिटफण्ड कंपनियों में काम करने के कारण मेरे स्कूल के बच्चों की पढ़ाई प्रभावित हुई, साथ ही अब आश्वस्त हूँ कि अब कोई भी ऐसा गलत कार्य नहीं करुंगा और अपने कर्तव्य का ईमानदारी से पालन करुंगा।